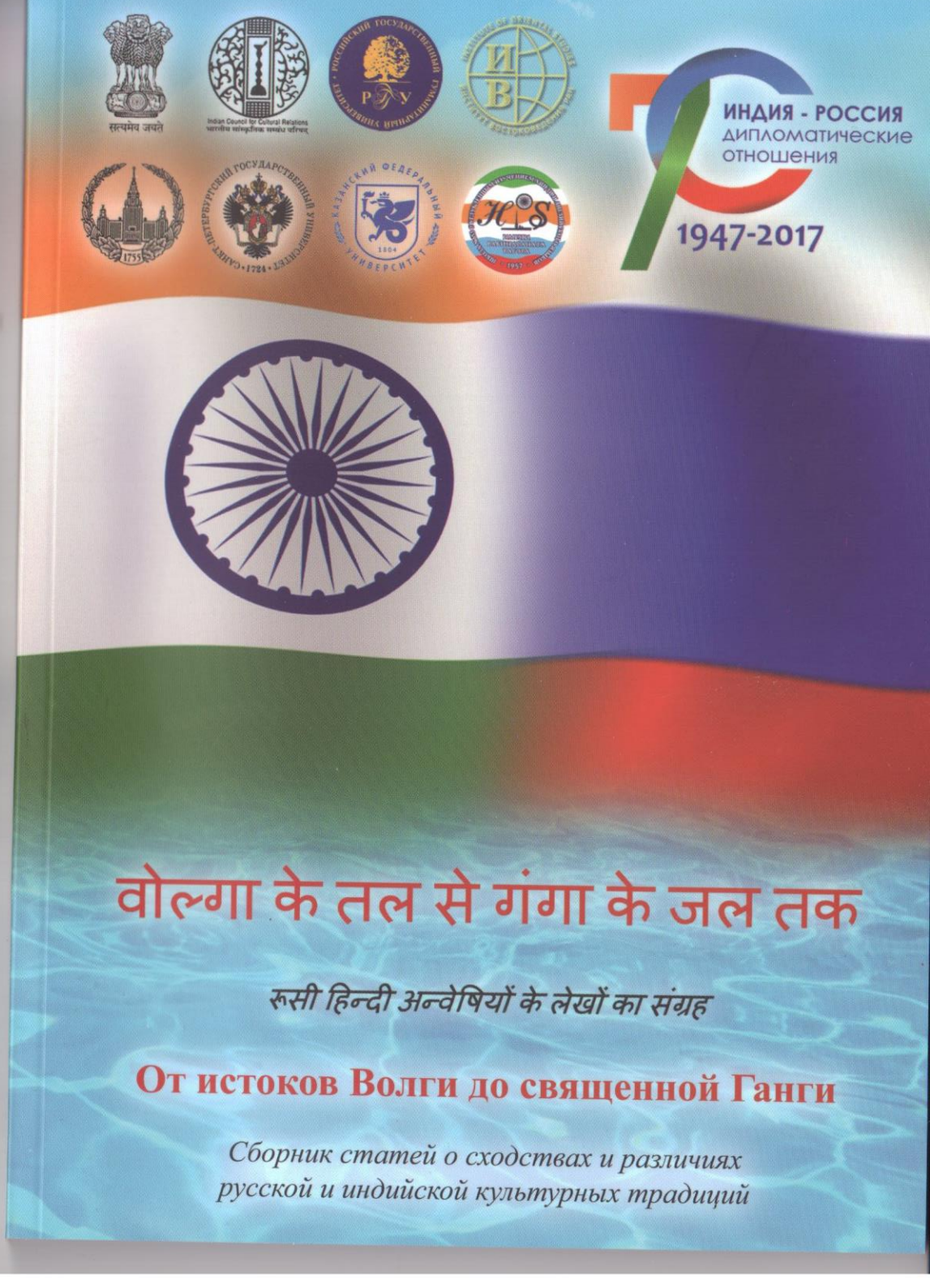
ИНДИЯ - РОССИЯ
дипломатические
отношения
1947-2017
वोल्गा के तल से गंगा के जल तक
रूसी हिन्दी अन्वेषियों के लेखों का संग्रह
От истоков Волги до священной Ганги
Сборник статей о сходствах и различиях
русской и индийской культурных традиций

वोल्गा के तल से गंगा के जल तक

रूसी हिन्दी अन्वेषियों के लेखों का संग्रह

От истоков Волги до священной Ганги

Сборник статей о сходствах и различиях русской и индийской культурных традиций

Москва
2018

वोल्गा के तल से गंगा के जल तक

रूसी हिन्दी अन्वेषियों के लेखों का संग्रह

प्रमुख संपादिका
डॉ. मीनू शर्मा

सह संपादिका
डॉ. इन्दिरा गज़िएवा

सदस्य संपादक-मंडल
डॉ ग्युज़ेल स्त्रेलकोवा
डॉ अन्ना चेलनोकोवा
सुश्री एकातेरिना कोस्तिना
श्री दिमित्री बोबकोव

- निवेदन -

प्रस्तुत पुस्तक में प्रकाशित लेखों के विचार लेखकों के अपने हैं।
संपादक मण्डल का उनके विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है।

मास्को, रूस
2018

ОТ ИСТОКОВ ВОЛГИ ДО СВЯЩЕННОЙ ГАНГИ

Сборник статей о сходствах и различиях русской и индийской культурных традиций

Главный редактор
д-р Мину Шарма

Выпускающий редактор
д-р Индира Газиева

Редколлегия:
д-р Гюзэль Стрелкова
д-р Анна Челнокова
Екатерина Костина
Дмитрий Бобков

Москва
2018

UDC 008(470+540)(084)

От истоков Волги до священной Ганги : Сборник статей о сходствах и различиях русской и индийской культурных традиций. – М.: Пробел-2000, 2018. – 144 с.

ISBN 978-5-94282-659-4

В сборник вошли статьи на языке хинди, посвященные сходству и различию культурных традиций двух великих стран – России и Индии. Авторами статей являются студенты и преподаватели российских вузов – МГУ, РГГУ, СПбГУ, КФУ, в которых существуют кафедры индийских исследований, преподаются индийские языки, в частности, язык хинди.

Сборник статей студентов и преподавателей посвящен знаменательной дате в культурных связях России и Индии: в 2017 году наши страны отпраздновали 70-летие установления дипломатических отношений (1947–2017).

UDC 008(470+540)(084)

Статьи публикуются в авторской редакции.
Мнение редакции может не совпадать с мнением авторов.
Перепечатка материалов сборника осуществляется с разрешения редакционной коллегии.

ISBN 978-5-94282-659-4

© «Пробел-2000», 2018
© Коллектив авторов, 2018

प्राक्कथन

वोल्गा के तल से गंगा के जल तक' पुस्तक के विषय में लिखते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। इस पुस्तक में रूसी प्राध्यापकों तथा विद्यार्थियों द्वारा भारत व रूस की संस्कृति में निकटताओं को खोज कर लेखों के रूप में हिन्दी भाषा में अभिव्यक्त किया गया है। रूसी-भारतीय संस्कृति और जीवनचर्या पर आधारित इन लेखों को पढ़ कर अनुभव होता है कि भारत और रूस सांस्कृतिक स्तर पर गहरी साम्यता से जुड़े हैं। इस प्रकार की पुस्तक का प्रकाशन स्वयं में अनूठा तथा प्रथम है। मैं इस पुस्तक की मुख्य संपादिका तथा जवाहर लाल नेहरू सांस्कृतिक केंद्र की हिन्दी अध्यापिका डॉ मीनू शर्मा तथा सह संपादिका और रूसी राजकीय मानविकी विश्वविद्यालय में हिन्दी प्राध्यापिका प्रो. इन्दिरा गज़िएवा के इस अनथक प्रयास की न केवल सराहना करता हूँ अपितु कामना भी करता हूँ कि ये दोनों स्वस्थ रहते हुए भविष्य में भी इस प्रकार के प्रयास करती रहें। साथ ही संपादक मण्डल तथा इस पुस्तक में लेख लिखने वाले सभी मॉस्को, कज़ान, तथा सेंट पीटर्सबर्ग के रूसी हिन्दी प्राध्यापकों और विद्यार्थियों को भी बधाई देता हूँ, जिन्होंने भारतीय और रूसी संस्कृति में समानताओं को खोजने का महत्वपूर्ण कार्य किया और हिन्दी में लेखों को रचा जिस से इस पुस्तक को आकार मिला।

आशा है यह पुस्तक हिन्दी प्रेमियों के साथ-साथ कला-संस्कृति अन्वेषियों, जिज्ञासुओं, विद्यार्थियों और शोधार्थियों के लिए तो उपयोगी होगी ही, साथ ही भारत और रूस के मित्रतापूर्ण सम्बन्धों को और अधिक दृढ़ करने में एक सेतु का कार्य करेगी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि भारत और रूस में इसके अनेक उत्साही पाठक होंगे और भारत तथा रूस के बीच मैत्रीपूर्ण बंधन और सांस्कृतिक संबंध के विषय में उन्हें विस्तृत ज्ञान प्राप्त होगा।

पंकज सरन
रूस में भारत के राजदूत

क्सेनिया लेसिक

एशिया और अफ्रीका अध्ययन संस्थान
मॉस्को राजकीय विश्वविद्यालय
एम॰ए॰ की छात्रा
ksundra-k@yandex.ru

आज की हिन्दी कविता

आजकल हमारी ज़िन्दगी अजब रफ़्तार से गुज़र रही है। हम हमारे जीवन में सुख और दुख पर ध्यान नहीं देते हैं।। हम मायावी सफलताओं के पीछे दौड़ते रहते हैं और अमन-चैन के बारे में भूल जाते हैं। फिर भी एक रहस्य रह जाता है जो लोगों को सुख और दुख देता है। यह रहस्य हमारी कविताएँ हैं जो हम लोगों को आदमी बनाता है। अभिव्यक्त होते हुए कविताएँ हमारे जीवन की अनुभूति हैं।

कहा जाता है कविता समाज को नई चेतना प्रदान करती है, आनन्द का सही मार्ग दिखाती है और मानवीय गुणों की प्रतिष्ठा करती है। जो लोग कविताएँ पढ़ते हैं वे अपने इतिहास और संस्कृति को हमेशा याद करते हैं।

आज की दुनिया में कविताएँ कम पढ़ी जाती हैं। पर फिर भी ये कविताएँ हमारी सम्वेदनशीलता, आगे रहने की एक शहदिया बूंद हैं। काव्य समाज की पहचान है यानी जीवन में लोग खुद को किस जगह पर देखते हैं, अपने आपको कैसे समझते हैं, वे किन समस्याओं को लेकर चिन्तित और परेशान हैं। आज की हिन्दी कविताओं में नए भावबोधों की अभिव्यक्ति के साथ ही नए मूल्यों और नए शिल्प-विधान का अन्वेषण किया जाता है।

कवि समाज का एक प्रतिनिधि एक आवाज़ है जो सब के जीवन का चित्रण विभिन्न रंगों से करता है, वह ऐसी कविताएँ लिखता है जिनमें संस्कृति का आदर ही नहीं दुनिया के अनुभव झलकते रहते हैं।

आज की हिन्दी काव्य की कई धाराएँ हैं जिनमें «महिला लेखन» (गगन गिल, नीलेश रघुवंशी, अनामिका), आदिवासी की कविताएँ (निर्मला पुतुल), नक्सलवाद की कविताएँ (नीलाभ, आलोकधन्वा और चंद्रभूषण) और नवगीत (रमेश रंजक, कैलाश गौतम) शामिल हैं।

नयी कविता के लिए जगत्-जीवन से संबंधित कोई भी स्थिति, संबंध, भाव या विचार त्याज्य (अनुचित) नहीं है। जन्म से लेकर मृत्यु तक आज के मानव-जीवन का जिन स्थितियों, परिस्थितियों, संबंधों, भावों, विचारों और कार्यों से साहचर्य होता है, उन्हें नयी कविता अभिव्यक्त करती रहती है।

कविताएँ पढ़ते-पढ़ते हमें लगा कि अधिकांश कविताएँ संघर्ष के बारे में लिखी हुई हैं। आजकल कम कवि और कवयित्रियाँ प्यार के बारे में प्रकृति के बारे में मानवीय रिश्तेदारों के बारे में लिखते हैं। कविताओं का विशेष विषय जनता के अधिकार और आज़ादी के लिए लड़ाई हैं, पर इसके साथ ये कविताएँ बेहद बौद्धिक लगती हैं। आज के कवियों की कविताएँ दार्शनिक कविताएँ हैं। यह कहना ही चाहिए कि महिला लेखन में ऊपरोलिखित विशेषताएँ उपलब्ध होती हैं। आधुनिक कवयित्रियों की कविताओं में स्त्री के आसपास स्थित दूसरे लोगों की उसके प्रति उदासीनता ही नहीं पर कठोर वास्तविकताओं की लड़ाई ही की चर्चा की जाती है। उदहरण के लिए अनामिका की कविताओं में स्त्री की ज़िन्दगी को उसके जीवन, उसके मातृत्व, उसके पारिवारिक दायित्वों उसकी सम्वेदनशीलता उसकी मौत और उसके प्यार की सहायता से दिखाया गया हैं। जब कत्यायनी की कविताओं में औरत का चित्रण विपक्षी से किया जाता है, वह खुद अपनी खुशियों ही नहीं लेकिन पूरी दुनिया की खुशियों के लिए लड़ती रहती है। इसके साथ नयी कविता सामाजिक यथार्थ तथा उसमें व्यक्ति की भूमिका को परखने का प्रयास करती है। इसके कारण ही नयी कविता का सामाजिक यथार्थ से गहरा संबंध है। आज के कवि परिस्थितिकी, वैश्वीकरण, युद्ध के बारे में ही लिखने लगे। कविता धर्म, दर्शन, नीति, आचार सभी प्रकार के मूल्यों को चुनौती देती है। नयी कविता का स्वर अपने परिवेश की जीवनानुभूति से संबंधित है। वे वैश्वीकरण को न स्वीकार करने से नहीं डरते हैं। वे युद्ध का विरोध करते रहते हैं।

आजकल के कवि भारतीय समस्याओं के बारे में अपनी रचनाओं में लिखते हैं। वे दिल खोलकर अपने देश का आदर करके देश के वजूद के बारे में बताते हैं, जीवन की स्थितियों का विरोध करते हैं और छोटे लोगों का पक्ष लेते हैं। नयी कविता जीवन के एक-एक क्षण को सत्य मानती है और उस सत्य को पूरी हार्दिकता और पूरी चेतना से भोगने का समर्थन करती है। ऐसा लगता है कि छोटे-छोटे लोग अपने गहरे कुओं में से निकलकर सबकी दुनिया में रहने लगते हैं।

अपनी रचना «बूढ़ी पृथ्वी का दुख» रुपक अलंकार का इस्तेमाल करते हुए निर्मला पुतुल प्रकृति के दर्द के बारे में लिखती हैं -

क्या तुमने कभी सुना है
सपनों में चमकतीं कुल्हाडियों के भय से
पेड़ों की चित्कार?...
सुना है कभी
रात के सन्नाटे में अंधेरे से मुँह ढाँप
किस कदर रोती हैं नदियाँ?...
अगर नहीं, तो क्षमा करना!
मुझे तुम्हारे आदमी होने पर सन्देह है!

हर कवि अपने देश भारत के मजबूत हाने का सपना देखता है। जैसे कि कवि आलोकधन्वा अपनी कविता «आम का पेड़» में भारत के बारे में बताते हैं -

ज़मीन तक झुक कर
ऊपर उठी हैं इसकी कई डालियाँ
कुछ तने को ऊपर उठाती
साथ-साथ गयी हैं खुले में...
रात में इसके नीचे सूखी घास जैसी गरमाहट
नीड़, पक्षियों की साँस।

इस कविता में भी रुपक अलंकार का इस्तेमाल किया जाता है। आम का पेड़ भारत है जो एक दिन मजबूत हो जाएगा, और इस पेड़ के नीचे लोग रहते हैं जो उड़ने का सपना देखते रहते हैं। इस कविता में आगे जीने की और आगे बढ़ने की लोगों की आशा दिखाई दे रही है।

हर कवि अपने देश की खुशी की खातिर अपना जीवन देने को तैयार है, और खुद आदमी रहते हुए अपनी रचनाओं में देश की समस्याओं दर्दों दुख और सुख के बारे

में बताने को तैयार है। असद ज़ैदी अपनी कविता «अप्रकाशित कविता» में लिखते हैं -

मनुष्यों में वह सिर्फ़ मुझे पहचानती है
और मैं भी मनुष्य जब तक हूँ तब तक हूँ।

एक दिन महादेवी वर्मा ने कविता का स्वरूप स्पष्ट करते हुए कहा कि - "कविता कवि विशेष की भावनाओं का चित्रण है।" कवि अपनी रचनाओं में अपनी भावनाओं के बारे में लिखते हैं। पर इन भावनाओं में अपने देश और अपने अवाम का आदर गौरव और कवि के दर्द भी शामिल होते हैं। आज की हिन्दी कविताएँ एक दीपक है जो लोगों के जीवन को सदियों तक प्रकाश देती रहती है और देती रहेगी ।